The Eternal Epic of Divine Mother

दुर्गा सप्तशती

DURGA SAPTASHATI

Chapter 2: The Emergence of Mahalakshmi & the Battle Against Mahishasura's Army

अध्याय २: महालक्ष्मी का प्रादुर्भाव एवं महिषासुर की सेना का युद्ध

The Epic Struggle of Cosmic Good against the Usurper Mahishasura.

Durga Saptashati

|| 'द्वितीय अध्याय' ||

—

Numerology By Nehaa

Connect on WhatsApp for Consultation: 8802673153

यह अंश मार्कण्डेय पुराण के अन्तर्गत देवी माहात्म्य के द्वितीय अध्याय 'महिषासुर की सेना का वध' का है।

सारांश:

यह अध्याय देवताओं के तेज से देवी (महालक्ष्मी) के प्राकट्य और महिषासुर की सेना के विनाश का वर्णन करता है।

1. देवी का प्रादुर्भाव: पूर्वकाल में, महिषासुर ने सौ वर्षों तक चले घोर संग्राम में देवताओं को परास्त कर स्वर्ग पर अधिकार कर लिया। पराजित देवताओं ने ब्रह्माजी को आगे करके भगवान शंकर और विष्णु के पास जाकर अपना दुख सुनाया और महिषासुर के वध का उपाय पूछा। इस पर, शिव, विष्णु और अन्य देवताओं के शरीर से अत्यधिक तेज निकला, जो मिलकर एक नारी के रूप में परिवर्तित हो गया। यह देवी महिषासुरमर्दिनी महालक्ष्मी थीं।
2. देवताओं द्वारा देवी का सम्मान: विभिन्न देवताओं ने अपने अस्त्र-शस्त्र और आभूषण देकर देवी का सम्मान किया। इन्द्र ने वज्र, यमराज ने दण्ड, वरुण ने पाश, ब्रह्मा ने कमण्डलु, सूर्य ने तेज, काल ने ढाल-तलवार, क्षीरसागर ने वस्त्र-आभूषण, हिमालय ने सिंह (वाहन) और रत्न, कुबेर ने मधुपात्र, शेषनाग ने नागहार आदि भेंट किए।
3. सिंहनाद और युद्ध की शुरुआत: अस्त्र-शस्त्र धारण करने के बाद, देवी ने गर्जना की, जिससे तीनों लोक काँप उठे। महिषासुर क्रोधित होकर अपनी विशाल सेना के साथ युद्ध के लिए दौड़ा। महिषासुर के सेनानायक चिक्षुर, चामर, उदग्र, महाहनु, असिलोमा, बाष्कल, परिवारित, बिडाल आदि करोड़ों रथ, हाथी और घोड़ों की सेना के साथ देवी से लड़ने लगे।
4. दैत्यों की सेना का विनाश: देवी ने क्रोध में भरकर खेल-खेल में ही दैत्यों के सभी अस्त्र-शस्त्र काट डाले। उनके निःश्वास से हजारों गण प्रकट हुए, जो देवी की शक्ति से बढ़कर असुरों का संहार करने लगे। देवी ने त्रिशूल, गदा, शक्ति, खड्ग, घण्टा और पाश आदि से असंख्य महादैत्यों को मार गिराया। उनका वाहन सिंह भी क्रोधित होकर दैत्यों को भस्म करने लगा।
5. संग्राम का भयंकर दृश्य: युद्धभूमि में रथ, हाथी, घोड़े और असुरों की लाशों का ढेर लग गया, और खून की नदियाँ बहने लगीं। कुछ दैत्य धड़ कटने के बाद भी लड़ते रहे और नाचते भी रहे। देवी ने क्षणभर में असुरों की विशाल सेना को नष्ट कर दिया। आकाश में खड़े देवताओं ने इस पर प्रसन्न होकर देवी पर पुष्पवर्षा की।

इस प्रकार, द्वितीय अध्याय में देवी द्वारा महिषासुर की सेना के विनाश का वर्णन समाप्त होता है।

Durga Saptashati
|| 'द्वितीय अध्याय' ||

Chapter 2 :

देवताओं के तेज से देवी का प्रादुर्भाव और महिषासुर की सेना का वध

॥ विनियोग ॥

ॐ मध्यम चरित्र के विष्णु ऋषि, महालक्ष्मी देवता, उष्णिक् छन्द, शाकम्भरी शक्ति, दुर्गा बीज, वायु तत्त्व और यजुर्वेद स्वरूप है। श्रीमहालक्ष्मी की प्रसन्नता के लिये मध्यम चरित्र के पाठ में इसका विनियोग है।

॥ ध्यान ॥

मैं कमल के आसन पर बैठी हुयी प्रसन्न मुख वाली महिषासुरमर्दिनी भगवती महालक्ष्मी का भजन करता हूँ, जो अपने हाथों में अक्षमाला, फरसा, गदा, बाण, वज्र, पद्म, धनुष, कुण्डिका, दण्ड, शक्ति, खड्ग, ढाल, शङ्ख, घण्टा, मधुपात्र, शूल, पाश और चक्र धारण करती हैं।

ऋषि कहते हैं - पूर्वकाल में देवताओं और असुरों में पूरे सौ वर्षों तक घोर संग्राम हुआ था। उसमें असुरों का स्वामी महिषासुर था और देवताओं के नायक इन्द्र थे। उस युद्ध में देवताओं की सेना महाबली असुरों से परास्त हो गयी। सम्पूर्ण देवताओं को जीतकर महिषासुर इन्द्र बन बैठा॥

तब पराजित देवता प्रजापति ब्रह्माजी को आगे करके उस स्थानपर गये, जहाँ भगवान् शंकर और विष्णु विराजमान थे॥

देवताओं ने महिषासुर के पराक्रम तथा अपनी पराजय का यथावत् वृतान्त उन दोनों देवेश्वरों से विस्तार पूर्वक कह सुनाया॥

वे बोले- 'भगवन्! महिषासुर सूर्य, इन्द्र, अग्नि, वायु, चन्द्रमा, यम, वरुण तथा अन्य देवताओं के भी अधिकार छीनकर स्वयं ही सबका अधिष्ठाता बना बैठा है॥

उस दुरात्मा महिष ने समस्त देवताओं को स्वर्ग से निकाल दिया है। अब वे मनुष्यों की भाँति पृथ्वी पर विचरते हैं॥

दैत्यों की यह सारी करतूत हमने आप लोगों से कह सुनायी। अब हम आपकी शरण में आये हैं। उसके वध का कोई उपाय सोचिये'॥

सहस्र नेत्रों वाले देवराज इन्द्र ने अपने वज्र से वज्र उत्पन्न करके दिया और ऐरावत हाथी से उतारकर एक घण्टा भी प्रदान किया॥

यमराज ने काल दण्ड से दण्ड, वरुण ने पाश, प्रजापति ने स्फटिकाक्ष की माला तथा ब्रह्माजी ने कमण्डलु भेंट किया॥

सूर्य ने देवी के समस्त रोम-कूपों में अपनी किरणों का तेज भर दिया। काल ने उन्हें चमकती हुयी ढाल और तलवार दी॥

क्षीरसमुद्र ने उज्ज्वल हार तथा कभी जीर्ण न होने वाले दो दिव्य वस्त्र भेंट किये। साथ ही उन्होंने दिव्य चूड़ामाणि, दो कुण्डल, कड़े, उज्ज्वल अर्धचन्द्र, सब बाहुओं के लिये केयुर, दोनों चरणों के लिये नूपुर, गले की सुन्दर हँसली और सब अँगुलियों में पहनने के लिये रत्नों की बनी अँगूठियाँ भी दीं। विश्वकर्मा ने उन्हें अत्यन्त निर्मल फरसा भेंट किया॥

साथ ही अनेक प्रकार के अस्त्र और अभेद्य कवच दिये; इनके सिवा मस्तक और वक्षःस्थल पर धारण करने के लिये कभी न कुम्हलाने वाले कमलों की मालाएँ दीं॥

जलधि ने उन्हें सुन्दर कमल का फूल भेंट किया। हिमालय ने सवारी के लिये सिंह तथा भाँति-भाँति के रत्न समर्पित किये॥

धनाध्यक्ष कुबेर ने मधु से भरा पानपात्र दिया तथा सम्पूर्ण नागों के राजा शेष ने, जो इस पृथ्वी को धारण करते हैं, उन्हें बहुमूल्य मणियों से विभूषित नागहार भेंट दिया। इसी प्रकार अन्य देवताओं ने भी आभूषण और अस्त्र-शस्त्र देकर देवी का सम्मान किया। तत्पश्चात् उन्होंने बारम्बार अट्टहासपूर्वक उच्चस्वर से गर्जना की। उनके भयङ्कर नाद से सम्पूर्ण आकाश गूँज उठा॥देवी का वह अत्यन्त उच्चस्वर से किया हुआ सिंहनाद कहीं समा न सका, आकाश उसके सामने लघु प्रतीत होने लगा। उससे बड़े जोर की प्रतिध्वनि हुयी, जिससे सम्पूर्ण विश्व में हलचल मच गयी और समुद्र काँप उठे॥

पृथ्वी डोलने लगी और समस्त पर्वत हिलने लगे। उस समय देवताओं ने अत्यन्त प्रसन्नता के साथ सिंहवाहिनी भवानी से कहा- 'देवि! तुम्हारी जय हो'॥

सम्पूर्ण त्रिलोकी को क्षोभग्रस्त देख दैत्यगण अपनी समस्त सेना को कवच आदि से सुसज्जित कर, हाथों में हथियार ले सहसा उठकर खड़े हो गये। उस समय महिषासुर ने बड़े क्रोधमें आकर कहा- 'आः! यह क्या हो रहा है?' फिर वह सम्पूर्ण असुरों से घिरकर उस सिंहनाद की ओर लक्ष्य करके दौड़ा और आगे पहुँचकर उसने देवी को देखा, जो अपनी प्रभा से तीनों लोकों को प्रकाशित कर रही थीं॥

साथ ही महर्षियों ने भक्ति भाव से विनम्र होकर उनका स्तवन किया। उनके चरणों के भार से पृथ्वी दबी जा रही थी। माथे के मुकुट से आकाश में रेखा- सी खींच रही थी तथा वे अपने धनुष की टङ्कार से सातों पातालों को क्षुब्ध किये देती थीं॥

देवी अपनी हजारों भुजाओं से सम्पूर्ण दिशाओं को आच्छादित करके खड़ी थीं। तदनन्तर उनके साथ दैत्यों का युद्ध छिड़ गया॥

नाना प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों के प्रहार से सम्पूर्ण दिशाएँ उद्भासित होने लगीं। चिक्षुर नामक महान् असुर महिषासुर का सेनानायक था॥

वह देवी के साथ युद्ध करने लगा। अन्य दैत्यों की चतुरङ्गिनी सेना साथ लेकर चामर भी लड़ने लगा। साठ हजार रथियों के साथ आकर उदग्र नामक महादैत्य ने लोहा लिया॥

एक करोड़ रथियों को साथ लेकर महाहनु नामक दैत्य युद्ध करने लगा। जिसके रोएँ तलवार के समान तीखे थे, वह असिलोमा नामका महादैत्य पाँच करोड़ रथी सैनिकों सहित युद्ध में आ डटा॥

साठ लाख रथियों से घिरा हुआ बाष्कल नामक दैत्य भी उस युद्धभूमि में लड़ने लगा। परिवारित नामक राक्षस हाथी सवार और घुड़सवारों के अनेक दलों तथा एक करोड़ रथियों की सेना लेकर युद्ध करने लगा। बिडाल नामक दैत्य पाँच अरब रथियों से घिरकर लोहा लेने लगा। इनके अतिरिक्त और भी हजारों महादैत्य रथ, हाथी और घोड़ों की सेना साथ लेकर वहाँ देवी के साथ युद्ध करने लगे। स्वयं महिषासुर उस रणभूमि में कोटि-कोटि सहस्र रथ, हाथी और घोड़ों की सेना से घिरा हुआ खड़ा था। वे दैत्य देवी के साथ तोमर, भिन्दिपाल, शक्ति, मूसल, खड्ग, परशु और पट्टिश आदि अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार करते हुये युद्ध कर रहे थे। कुछ दैत्यों ने उनपर शक्ति का प्रहार किया, कुछ लोगों ने पाश फेंके॥

तथा कुछ दूसरे दैत्यों ने खड्ग प्रहार करके देवी को मार डालने का उद्योग किया। देवी ने भी क्रोध में भरकर खेल-खेल में ही अपने अस्त्र-शस्त्रों की वर्षा करके दैत्यों के वे समस्त

अस्त्र-शस्त्र काट डाले। उनके मुखपर परिश्रम या थकावट का रञ्चमात्र भी चिह्न नहीं था, देवता और ऋषि उनकी स्तुति करते थे और वे भगवती परमेश्वरी दैत्यों के शरीरों पर अस्त्र-शस्त्रों की वर्षा करती रहीं। देवी का वाहन सिंह भी क्रोध में भरकर गर्दन के बालों को हिलाता हुआ असुरों की सेना में इस प्रकार विचरने लगा, मानो वनों में दावानल फैल रहा हो। रणभूमि में दैत्यों के साथ युद्ध करती हुयी अम्बिका देवी ने जितने निःश्वास छोड़े, वे सभी तत्काल सैकड़ों-हजारों गणों के रूप में प्रकट हो गये और परशु, भिन्दिपाल, खड्ग तथा पट्टिश आदि अस्त्रों द्वारा असुरों का सामना करने लगे॥

देवी की शक्ति से बढ़े हुये वे गण असुरों का नाश करते हुये नगाड़ा और शङ्ख आदि बाजे बजाने लगे॥

उस संग्राम-महोत्सव में कितने ही गण मृदङ्ग बजा रहे थे। तदनन्तर देवी ने त्रिशूल से, गदा से, शक्ति की वर्षा से और खड्ग आदि से सैकड़ों महादैत्यों का संहार कर डाला। कितनों को घण्टे के भयङ्कर नाद से मूर्च्छित करके मार गिराया॥

बहुतेरे दैत्यों को पाश से बाँधकर धरती पर घसीटा। कितने ही दैत्य उनकी तीखी तलवार की मार से दो-दो टुकड़े हो गये॥

कितने ही गदा की चोट से घायल हो धरती पर सो गये। कितने ही मूसल की मार से अत्यन्त आहत होकर रक्त वमन करने लगे। कुछ दैत्य शूल से छाती फट जाने के कारण पृथ्वी पर ढ़ेर हो गये। उस रणाङ्गन में बाणसमूहों की वृष्टि से कितने ही असुरों की कमर टूट गयी॥

बाज की तरह झपटने वाले देव पीड़क दैत्यगण अपने प्राणों से हाथ धोने लगे। किन्हीं की बाँहें छिन्न-भिन्न हो गयीं। कितनों की गर्दनें कट गयीं। कितने ही दैत्यों के मस्तक कट-कटकर गिरने लगे। कुछ लोगों के शरीर मध्यभाग में ही विदीर्ण हो गये। कितने ही महादैत्य जाँघें कट जाने से पृथ्वी पर गिर पड़े। कितनों को ही देवी ने एक बाँह, एक पैर और एक नेत्र वाले करके दो टुकड़ों में चीर डाला। कितने ही दैत्य मस्तक कट जाने पर भी गिरकर फिर उठ जाते और केवल धड़ के ही रूप में अच्छे-अच्छे हथियार हाथ में ले देवी के साथ युद्ध करने लगते थे। दूसरे कबन्ध युद्ध के बाजों की लयपर नाचते थे॥

कितने ही बिना सिर के धड़- हाथों में खड्ग, शक्ति और ऋष्टि लिये दौड़ते थे तथा दूसरे-दूसरे महादैत्य 'ठहरो! ठहरो!!' यह कहते हुये देवी को युद्ध के लिये ललकारते थे। जहाँ वह घोर संग्राम हुआ था, वहाँ की धरती देवी के गिराये हुये रथ, हाथी, घोड़े और

असुरों की लाशों से ऐसी पट गयी थी कि, वहाँ चलना-फिरना असम्भव हो गया था॥

दैत्यों की सेना में हाथी,घोड़े और असुरों के शरीरों से इतनी अधिक मात्रा में रक्तपात हुआ था कि थोड़ी देर में वहाँ खून की बड़ी-बड़ी नदियाँ बहने लगीं॥

जगदम्बा ने असुरों की विशाल सेना को क्षणभर में नष्ट कर दिया- ठीक उसी तरह, जैसे तृण और काठ के भारी ढ़ेर को आग कुछ ही क्षणों में भस्म कर देती है॥

और वह सिंह भी गर्दन के बालों को हिला-हिलाकर जोर-जोर से गर्जना करता हुआ दैत्यों के शरीर से मानो उनके प्राण चुन लेता था॥

वहाँ देवी के गणों ने भी उन महादैत्यों के साथ ऐसा युद्ध किया, जिससे आकाश में खड़े हुये देवतागण उनपर बहुत सन्तुष्ट हुये और फूल बरसाने लगे॥

इस प्रकार श्रीमार्कण्डेय पुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत देवी माहात्म्य

में 'महिषासुर की सेना का वध' नामक दूसरा अध्याय पूरा हुआ ।

Durga Saptashati

|| 'Chapter Two' ||

Chapter 2:

The Advent of the Goddess from the Tejas (Aura/Radiance) of the Devas and the Slaying of Mahishasura's Army

॥ **Application (Viniyoga)** ॥

Om, the Risi (sage) of the Middle Chapter is Vishnu, the presiding deity is Mahalakshmi, the meter is Usnik, the Shakti (power) is Shakambhari, the Bija (seed mantra) is Durga, the Tattva (element) is Vayu (air), and the form is the Yajurveda. This is applied to the recitation of the Middle Chapter for the pleasure of Sri Mahalakshmi.

॥ **Dhyana (Meditation)** ॥

I worship the pleased, lotus-seated Goddess Mahalakshmi, the destroyer of Mahishasura, who holds in her hands an akshamala (rosary), an axe, a mace, arrows, a thunderbolt, a lotus, a bow, a kundika (water pot), a staff, a shakti (spear), a sword, a shield, a conch, a bell, a honey-cup, a trident, a noose, and a discus.

The Sage said: In ancient times, there was a fierce battle between the gods and the asuras (demons) for a hundred years. Mahishasura was the lord of the asuras, and Indra was the leader of the gods. In that war, the army of the gods was defeated by the mighty asuras. Mahishasura, having conquered all the gods, himself became Indra.

Then the defeated gods, led by Prajapati Brahma, went to the place where Lord Shankar and Vishnu were seated.

The gods extensively narrated to those two lords of the gods the

actual account of Mahishasura's valor and their own defeat

They said, 'O Bhagavan! Mahishasura has seized the rights of Surya (Sun), Indra, Agni (Fire), Vayu (Wind), Chandra (Moon), Yama, Varuna, and other deities, and has himself become the sole ruler of all.

That wicked-souled Mahisha has driven all the gods out of heaven. Now they wander on Earth like mortals.

We have narrated to you all these deeds of the daityas (demons). Now we have come to your shelter. Please devise a means for his destruction.'

Thus, hearing the words of the Devas, Lord Vishnu and Shiva became greatly enraged at the Asuras. Their brows furrowed and their faces became contorted.

Then, a great effulgence emerged from the face of the extremely furious Chakrapani Shri Vishnu. Similarly, a mighty radiance emerged from the bodies of Brahma, Shankar, Indra, and other Devas. All of it merged into one.

That mass of great effulgence appeared like a blazing mountain. The Devas saw its flames spreading throughout all directions.

There was no comparison to the radiance that emerged from the bodies of all the Devas. Upon gathering, it transformed into the form of a woman and appeared to pervade all three worlds with its light.

The effulgence of Lord Shankar manifested as the Devi's face. The radiance of Yamaraja manifested as the hair on her head. The effulgence of Shri Vishnu Bhagwan manifested as her arms.

The radiance of the Moon manifested as her two breasts, and the radiance of Indra manifested as the central part (waist). The radiance of Varuna manifested as her thighs and calves, and the radiance of the Earth manifested as her hip region.

The radiance of Brahma manifested as her two feet, and the

radiance of the Sun manifested as her toes. The radiance of the Vasus manifested as the fingers of her hands, and the radiance of Kubera manifested as her nose.

The Devi's teeth manifested from the radiance of Prajapati, and her three eyes manifested from the radiance of Agni.

Her eyebrows manifested from the radiance of Sandhya (dusk), and her ears from the radiance of Vayu (wind). Similarly, the auspicious Devi manifested from the radiance of other Devas as well.

Thereafter, seeing the Devi who manifested from the mass of effulgence of all the Devas, the Devas, who were tormented by Mahishasura, were greatly pleased.

Lord Shankar, the wielder of the Pinaka (bow), drew a trident from his own trident and gave it to her; then Lord Vishnu also created a discus from his own discus and offered it to the Goddess.

Varuna also presented a conch, Agni gave her a shakti (spear), and Vayu gave her a bow and two quivers filled with arrows.

At the same time, the great sages, humbled with devotion, offered prayers to her. The earth was pressed down by the weight of her feet. A line was drawn across the sky by the crown on her forehead, and the twang of her bow agitated the seven underworlds.

The Goddess stood covering all directions with her thousands of arms. Thereafter, a battle broke out between her and the demons.

All directions began to glow with the striking of various types of weapons. The great demon named Chiksura was the commander of Mahishasura's army.

He began to fight with the Goddess. Chāmara also started fighting, bringing the fourfold army of other demons. The great demon named Udagra came with sixty thousand charioteers and engaged in battle.

The demon named Mahahanu began to fight with a crore of

charioteers. Asiloma, the great demon whose hair was sharp like a sword, arrived at the battlefield with five crore charioteer soldiers.

The demon named Bāṣkala, surrounded by sixty lakh charioteers, also fought in that battlefield. The demon named Parivārita, accompanied by many troops of elephant and horse riders and an army of one crore charioteers, began to fight. The demon named Biḍāla, surrounded by five billion charioteers, engaged in battle. Besides these, thousands of other great demons, along with armies of chariots, elephants, and horses, began to fight with the Goddess there.

Mahishasura himself stood in that battlefield, surrounded by crores of thousands of chariots, elephants, and horses. Those demons were fighting the Goddess by striking with weapons like the Tomara, Bhindipāla, Shakti, Mūsala, Khaḍga (sword), Parashu (axe), and Paṭṭisha. Some demons struck her with the Shakti weapon, and some threw the Pāsha (noose).

And some other demons attempted to kill the Goddess by striking with swords. The Goddess, filled with anger, playfully cut off all those weapons of the demons by showering her own weapons. There was not the slightest sign of effort or fatigue on her face; the gods and sages praised her, and the revered Goddess showered weapons on the bodies of the demons. The lion, the vehicle of the Goddess, also roared with anger, shaking the hair of its neck and moving through the army of the Asuras as if a forest fire was spreading in the woods. All the breaths the Goddess Ambikā exhaled while fighting the demons on the battlefield instantly manifested as hundreds and thousands of Gaṇas (attendants), who began to confront the Asuras with weapons like the Parashu, Bhindipāla, Khaḍga, and Paṭṭisha.

The Ganas, empowered by the Devi's strength, began to destroy the demons, playing drums, conches, and other musical instruments.

In that grand festival of battle, many Ganas were playing the Mridanga. Thereafter, the Devi slaughtered hundreds of great demons with her trident, mace, showers of power, and sword, etc. She rendered many unconscious and then slew them with the terrifying sound of her bell.

She bound many demons with a noose and dragged them across the ground. Many demons were severed into two pieces by the blow of her sharp sword.

Many, wounded by the strike of her mace, fell asleep on the ground. Many, severely injured by the blow of her pestle, began to vomit blood. Some demons fell in heaps on the earth because their chests were split by a pike. In that battlefield, the backs of many demons were broken by the shower of arrows.

The demon hordes, who swooped like eagles and tormented the gods, began to lose their lives. Some had their arms torn apart. Many had their necks cut off. The heads of many demons were chopped off and fell. The bodies of some were split in the middle. Many great demons fell to the earth with their thighs severed. The Devi tore many into two pieces, leaving them with one arm, one leg, and one eye. Even after their heads were cut off, many demons rose up again and, only in the form of trunks (Kabandha), took excellent weapons in hand and continued to fight with the Devi. Other Kabandhas danced to the rhythm of the battle drums.

Many headless trunks ran with swords, Shaktis, and Rish*tis in their hands, while other great demons challenged the Devi to battle, shouting, 'Stop! Stop!' The ground where that fierce battle took place was so covered with the chariots, elephants, horses, and corpses of demons struck down by the Devi that it became impossible to move there.

So much blood was shed from the bodies of elephants, horses, and demons in the demon army that soon, large rivers of blood began to flow there.

Jagadamba destroyed the massive army of demons in an instant—just as fire consumes a heavy pile of grass and wood in a few moments.

And that lion too, shaking the hair of his neck and roaring loudly, seemed to snatch the life out of the bodies of the demons.

There, the attendants of the Goddess also fought such a battle with those great demons, that the gods standing in the sky were very pleased with them and showered flowers.

Thus ends the second chapter of the Devi Mahatmya, titled 'The Slaughter of Mahishasura's Army,' which is part of the story of the Savarnika Manvantara in the sacred Markandeya Purana.

Numerology By Nehaa

Connect on WhatsApp for Consultation: 8802673153

Our Services

- Name Correction
- Lo Shu Grid reading
- Missing Number Remedies
- Business Name Correction
- Baby Name Correction
- Kundali Matching
- Lucky Mobile Number
- Lucky House Number
- Lucky Vehicle Number
- Home Vastu
- Office Vastu

Free Numerology Tools

- Numerology Name Calculator
- Lo Shu Grid Calculator
- Lucky Mobile Number Calculator
- Lucky Vehicle Number Calculator

- Numerology Kundali Matching Tool